AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

निरालाजी के साहित्य कार्यो का अध्ययन

उमा महेश धेरे

हंसराज मोरारजी पब्लिक स्कूल

अंधेरी वेस्ट मुंबई

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARIES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL.

सारांश

प्रस्तुत इकाई में आपने पढ़ा है कि छायावाद राष्ट्रीय सांस्कृतिक नवजागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है और यह नवजागरण और राष्ट्रीयता का स्वर सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साहित्य में अपने पूरे वेग से तथा विवरण सूत्रों से प्रकट हुआ है। उनकी कविता के काव्य और शिल्प दोनों में नवजागरण की प्रवृत्ति अपने पूरे वेग के साथ दिखाई देती है। निराला का पूरा व्यक्तित्व ही विद्रोही व्यक्तित्व था। बंधनों की दासता उन्हें । किसी हालत में स्वीकार्य न थी। अतः अपनी कविता और गद्य दोनों के विषय चयन से लेकर भाव, भाषा, शिल्प सभी के स्तर पर वे परंपरा को तोड़ते हैं उसको नया रंग रूप देते हैं। इसका यह मायने नहीं कि परंपरा को वह नितांत उठा कर अलग कर देने वाली मानते हैं। वे परंपरा का अवगाहन करते हैं उसमें से जो . श्रेयवान है उसे ग्रहण करते हैं अपनाते हैं लेकिन जो निरर्थक है उसे छोड़ देते हैं। देश के समाज के उत्थान और नव निर्माण की आकांक्षा उनमें प्रबल है।

कीवर्ड : निरालाजी, *व्यक्तित्व*

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

प्रस्तावना

नवजागरण और राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य का अध्ययन करते हुए इस खण्ड की पिछली दो इकाइयों में आप प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद के साहित्य के विषय में पढ़ चुके हैं। आप जान चुके हैं कि कैसे प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज की ज्वलंत समस्याओं को उठाया और उनके कारणों को तलाशा और समाधान की ओर पाठक को उन्मुख किया। जयशंकर प्रसाद ने अपने काव्य और गद्य के माध्यम से किस तरह राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम और नवजागरण की चेतना को वाणी दी आप यह जानकारी भी हासिल कर चुके हैं। आपने पढ़ा है कि किस तरह यह चेतना प्रसाद की कविता से अधिक उनके गद्य में विशेषकर नाटकों में मुखर हुई हैं।

प्रस्तुत इकाई में आप निराला के साहित्य में विद्यमान राष्ट्रीयता और नवजागरण की चेतना के विषय में पढ़ेंगे। निराला प्रमुख रूप से कवि हैं यद्यपि उन्होंने बहुत सा गद्य भी लिखा है लेकिन उनकी प्रमुख पहचान कवि के रूप में है। प्रस्तुत इकाई भी उनके रचनाकार व्यक्तित्व के अनुकूल विशेष रूप से कविता पर और गौण रूप से गद्य पर केन्द्रित है।

उद्देश्य

1ण निराला साहित्य की पृष्ठभूमि का परिचय दे सकेंगे
2ण निराला के काव्य की अंतर्वस्तु का उल्लेख कर सकेंगे
3ण निराला की कविता में राष्ट्रीयता और नवजागरण के तत्त्वों को पहचान सकेंगे

निराला साहित्य की पृष्ठभूमि

हिंदी में जिस कालखण्ड को छायावाद के नाम से जाना जाता है वह देश के राष्ट्रीय सामाजिक पटल पर अत्यंत तीव्र गतिविधियों का समय था । स्वाधीनता आंदोलन इस समय अपने प्रखर रूप में सक्रिय था । भारतीय जनमानस न केवल अंग्रेजों की राजनीतिक दासता से मुक्त होना चाहता था वरन उनके आर्थिक–सांस्कृतिक वर्चस्व को भी पलट कर अपनी अस्मिता को पहचानने और अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने. के लिए कटिबद्ध था। उन्नीसवीं शताब्दी में देश में पुनर्जागरण की जो चेतना पनपी थी बीसवीं शताब्दी के . दूसरे दशक तक आते–आते वह जन–जन में व्याप्त हो गई थी। अपनी शक्ति को पहचानते हुए उसे सम्पन्न करने और अन्याय, अत्याचार, दमन तथा दासता के विरोध का प्रयत्न हर तरफ दिखाई देता था। साहित्य के क्षेत्र में भी बंधनों से मुक्ति की इस इच्छा को रूपायित किया गया। मुक्ति की कामना और उसके लिए प्रयास वैसे तो इस युग के समस्त साहित्य में मिलते हैं लेकिन स्वच्छंदतावादी प्रवृत्ति का विशिष्ट और सघन रूप हमें ष्छायावादष में मिलता है। आधुनिक युग के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने अपनी "छायावाद" नामक पुस्तक में लिखा है कि छायावाद राष्ट्रीय–सांस्कृतिक नवजागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। राजनीतिक के क्षेत्र में जो काम गांधीवाद कर रहा था साहित्य के क्षेत्र में वही काम छायावाद कर रहा था।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

कहने का मतलब यह है कि स्वाधीनता और जागरण की देशव्यापी चेतना को तीव्र सघन साहित्यिक अभिव्यक्ति देकर छायावादी रचनाकारों ने जनरूचि का संस्कार और परिष्कार किया। छायावाद के सर्वाधिक सशक्त विद्रोही और स्वच्छांदतावादी दृष्टिकोण वाले कवि का नाम है सूर्यकांत त्रिपाठी निराला। प्रश्न उठता है कि यह विद्रोह किससे है और यह स्वच्छंदता किस चीज की है। यह विद्रोह है अन्याय से, अत्याचार से । यह स्वच्छंदता है रूढ़ियों से, दासता से । दासता चाहे कैसी भी हो राजनीतिक मानसिक या सांस्कृतिक निराला उससे मुक्ति के लिए आवाज उठाते हैं और दूसरों को भी उसके विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा देते हैं। पराधीनता से मुक्ति और राष्ट्रीय स्वाधीनता की आकांक्षा उनके साहित्य में विविध रूपों में प्रकट हुई है। कहीं जन्मभूमि के प्रति राग के रूप में, कहीं उससे उत्थान की आकांक्षा के रूप में तो कहीं उसकी दीनहीन स्थिति के उद्धार के लिए जागरण के आह्वान के रूप में। निराला के साहित्यिक संस्कारों का निर्माण बंगाल में हुआ था। ध्यान देने की बात है कि आधुनिक भारतीय नवजागरण की शुरूआत बंगाल से ही हुई थी। अतः २. स्वाभाविक था कि निराला के कविता का व्यक्तित्व नवजागरण की चेतना में हुआ हो। रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उनकी मानसिकता और भावभूमि को अंतरतम तक प्रभावित किया था।

निराला काव्य की अंतर्वस्तु

देशप्रेम और राष्ट्रीयता

आजादी की लड़ाई के दौर के साहित्य का प्रमुख भावबोध है देशप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना। देश प्रेम का सीधा संबंध मातृभूमि के प्रति अनुराग और दायित्वबोध से होता है। निराला की कविता इस भावबोध से भरी पड़ी है। कवि अपनी वाणी को मातृभूमि की वेदना से गौरवान्वित करता है। और हर कंठ से जन्मभूमि की पुकार सुनना चाहता है। जिससे चारों दिशाओं में जन्मभूमि की वंदना की लहरें उठती महसूस हों :

बंदू पद सुंदर तव, छंद नवल स्वर गौरव। जननि, जनक–जननि–जननि, ———मातृभूमि भाषे। जागो, नव अंबर–भर, ज्योतिस्तर वासे उठे स्वरोर्मियों–मुखर दिक्कुमारिका पिक–रव .

विदेशी आक्रांताओं से पददलित जन्मभूमि के चरणों में जीवन अर्पित कर के उसके आँसूओं को पोंछ देने की कामना कवि करता है :

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

नर जीवन के स्वार्थ सकल बलि हों तेरे चरणों पर माँ,

हिंदी साहित्य

मेरे श्रम–संचित सब फल जीवन के रथ पर चढ़ कर, सदा मृत्यु पथ पर बढ़ कर, महाकाल के खरतर शर सह सकूँ मुझे तू कर दृढ़तर; जागे मेरे उर में तेरी मूर्ति अश्रुजल धौत विमल, दृग जल से पा बल, बलि कर दूँ जननि, जन्म–श्रम–संचित फल।

बाधाएँ आएँ तन पर, देखू, तुझे नयन मन भर, मुझे देख तू सजल दृगों से अपलक, उर के शतदल पर, क्लेद युक्त अपना तन दूंगा मुक्त करूँगा तुझे अटल, तेरे चरणों पर देकर बलि सकल श्रेय–श्रम संचित फल –गीतिका बलिदान चाहती है जन्मभूमि खेलोगे जान ले हथेली पर – महाराज शिवाजी का पत्र अपना पूरा जीवन, पूरी शक्ति, पूरा श्रम देश के लिए लगा देने की इच्छा, कठिन परिस्थितियों को झेल सकने, प्राण न्यौछावर कर देने की कामना ही जैसे कवि के जीवन का लक्ष्य है। वह ईश्वर से प्रार्थना करता है तो भी अपने लिए नहीं, भारत की स्वतंत्रता के लिए। सरस्वती की वंदना करते हुए कहता है कि इस देश को वरदान दो कि हर तरफ स्वतंत्रता का अमृत मंत्र गुंजायमान होता सुनाई दे, भारत का नव निर्माण करो जिससे हर तरह के अज्ञान और अंधकार के बंधन नष्ट हो जाएँ। इसके जीवन में नई गति, नया कंठ और नयी मुक्ति का स्वर पर दो :

वर दे वीणा वादिनी वर दे ! प्रिय स्वतंत्र–रव अमृत–मंत्र नव

भारत में भर दे ! काट अंध उर के बंधन स्तर बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर, कलुष–भेद–तम हर प्रकाश भर ––– जगमग जग कर दे। नव गति, नव लय ताल–छंद नव नवल कंठ, नव जलद–मंद रव, नव नभ के नव विहग–वृन्द को

नव पर नव स्वर दे !

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

प्रकृति प्रेम देश प्रेम में तदाकार

छायावादी कवियों की एक प्रमुख पहचान उनके प्रकृति सौंदर्य बोध और उसकी सशक्त और संश्लिष्ट अभिव्यक्ति से बनी है। लेकिन यह प्रकृति का सौंदर्य निरूपण मात्र नहीं है। इन कवियों के लिए प्रकृति प्रेम देश प्रेम का ही पर्याय है। आचार्य शुक्त ने "कविता क्या हैष नामक निबंध में लिखा है कि जो अपने देश के वन नदी पर्वतों से प्रेम नहीं करते वे हजार बार देश प्रेम, देश प्रेम रटते रहें। उनकी देश भक्ति अवास्तविक ही होती है। शुक्ल जी का यह कथन अपने समय की मनोभूमिका को उजागर करता है। भारत के प्राकृतिक भूगोल के भीतर भारत माता की कल्पना वास्तव में नवजागरण के साहित्य की विशिष्ट उपलब्धि है। भारत का ऐसा ही चित्र खींचते हुए उसके बौद्धिक, प्राकृतिक, सांस्कृतिक उत्थान, समृद्धि और विजय की कामना निराला करते हैं

"भारति, जय, विजय करे ! कनक–शस्य–कमल धरे !

लंका पदतल शतदल गर्जितोर्मि सागर–जल धोता शुचि चरण युगल स्तव कर बहु–अर्थ–भरे।

तरु तृण वन लता वसन, अंचल में खचित सुमन, गंगा ज्योर्तिजल कण धवल धार हार गले।

मुकुट शुभ्र हिम–तुषार। प्राण प्रणव ओंकार,

ध्वनित दिशाएँ उदार, शतमुख–शतरव–मुखरे।

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

हरी भरी प्राकृतिक संपदा से संपन्न भारत भूमि, इसके चरणों के समीप लंका मानो शतदल कमल की भाँति उपस्थित है और गरजता हुआ सागर इसके चरणों को धो रहा है। इसके वनों में फैली वनस्पतियाँ, लताएँ

और वृक्ष इसका फूलों से सजा आँचल है। गंगा की निर्मल जलधारा इसका ज्योतिर्मय हार है। सुनहरी बर्फ से ढका हिमालय इसका मुकुट है। इस भारतभूमि के प्राणों में ओंकार ध्वनि गुंजायमान हो इसकी कामना कवि करता है।

जागरण का स्वर

नवजागरण युग की प्रमुख पुकार बंधनों के प्रति जागरूक होने और उनके तोड़ने के लिए प्रयत्नशील होने की है। वस्तुतः यह राष्ट्रीय उद्‌बोधन का युग है। जिसमें दासता और अन्याय को समाप्त करके मुक्ति पाने की इच्छा जगाई गई है। निराला की कविताओं में जागरण का स्वर जगह–जगह दिखाई देता है। ष्जागो फिर एक बारष् नामक उनकी प्रसिद्ध कविता में प्रकृति के माध्यम से और ऐतिहासिक सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से जनमानस को जगाने, उसमें आत्मविश्वास का संचार करने का प्रयास है। बंधनों को झटक कर तोड़ने के लिए सक्रिय होने की प्रेरणा है। एक और तो कवि प्रभात बेला के माध्यम से जागरण का आवाहन करता है।

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

जागो फिर एक बार! प्यारे जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें

अरूण पंख तरूण किरण खड़ी खोलती है द्वार –

उगे अरूणाचल में रवि आयी भारती–रति कवि कंठ में . क्षण–क्षण में परिवर्तित होते रहे प्रकृति पर गया दिन, आयी रात गयी रात, खुला दिन ऐसे ही बीते दिन, पक्ष, मास रू वर्ष कितने हजार जागो फिर एक बार !

हजारों वर्षों से आलस्य निद्रा में सोए जनमानस को जगाते हुए कवि अगली कविता में परंपरा और इतिहास के उदाहरण से प्रेरणा लेने का संदेश देता है। दूसरी और न्याय और मुक्ति के लिए गुरू गोविन्द सिंह के रण संग्राम का ध्यान दिलाता है और कहता है कि आज भी वैसी ही स्थिति है, अन्याय है, अत्याचार है, दमन है। इस देश के निवासी वीर हैं। लेकिन दीनता और कायरता के पीड़ित हैं। उन्हें अपनी शक्ति का बोध नहीं इसलिए शेरों की माँद पर स्यार का शासन है। देशवासियों को शक्ति का बोध कराते हुए कवि कहता है :

शेरों की माँद में आया है आज स्यार जागो फिर एक बार

श्पशु नहीं वीर तुम, समर शूर क्रूर नहीं काल चक्र में हो दबे आज तुम राजकुँवर! समर–सरताज !

ष्तुम हो महान, तुम सदा हो महान है नश्वर यह दीन भाव कायरता, कामपरता ब्रह्म हो तुम पर–रज–भर भी है नहीं पूरा यह विश्वभार–ष जागो फिर एक बार!

सोयी हुई जनशक्ति को जगाना, उसे आत्मबोध प्रदान कराना कवि अपना अनिवार्य दायित्य समझता है। वह भारतीय जन को ध्यान दिलाता है कि तुम्हारी दीन–हीन पीड़ित दशा के लिए तुम स्वयं जिम्मेदार हो। शासक तुम्हारे प्रति जो पाशविक व्यवहार कर रहा है तुम उसके योग्य नहीं हो लेकिन अपने आलस्य और कायरता के कारण तुम्हारी आत्मशक्ति और शारीरिक बल दोनों ही सुप्त प्राय हो गए हैं

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

परिणामस्वरूप सांस्कृतिक कीर्ति के चरम शिखर पर रहने वाले देश में अज्ञान और निराशा का अंधकार है। अपनी श्रेष्ठता को पहचानते हुए जागो और अपने शौर्य और शक्ति को सिद्ध करो। एक अन्य कविता में निराला दैन्य का चित्रण करते हुए परंपरा में मौजूद ज्ञान से उसके समाधान का संदेश देते हैं रू

उठा आज कोलाहल गया लुट सकल संबल शक्तिहीन तन निश्चल रहित रक्त से रग–रग

मिला ज्ञान से जो धन

नहीं हुआ निश्चेतन .. बाँधो उससे जीवन

साधो पग–पग यह डग

जागरण की शक्ति में कवि आस्था ही नहीं उसे पूर्ण विश्वास है कि ज्ञान का प्रकाश दैन्य को धोकर विजय की दिशा में अग्रसर करता है :

जगा दिशा ज्ञान, उगा रवि पूर्ण का गगन में, नव यान !

हारे हुल सकल दैन्य दलमल चले–, जीते हुए लगे जीते हुए गले बंद वह विश्व में गूंजा विजय गान ।

ऐतिहासिक सांस्कृतिक कथ्यों और पात्रों द्वारा जागरण चेतना का प्रसार

राष्ट्रीय जागरण की भावना को जगाने में इतिहास और संस्कृति का अवगाहन अत्यंत प्रबल और सशक्त माध्यम होता है। इतिहास के बहाने रचनाकार वर्तमान को जीवंत बनाता है और उसकी समस्याओं से जूझने का मार्ग प्रशस्त करता है। निराला की प्रतिनिधि रचनाएँ ष्राम की शक्ति पूजाष और ष्तुलसीदासष इस क्षेत्र की महत्तर उपलब्धि हैं। पदाक्रांत भारतीय समाज की मुक्ति भारतीय परंपरा के लोकनायक राम और लोक समन्वयकारी कवि तुलसीदास दोनों से कैसे संभव है इस समस्या से कवि इन कविताओं में जूझा हे। "राम की शक्तिपूजाष में अन्यायी, अत्याचारी रावण को पराजित करने में राम सफल नहीं हो पा रहे क्योंकि अत्याचारी की शक्ति प्रबल है। उसे काबू कर पाना आसान नहीं। इस विवश स्थिति में बूढ़ा मंत्री जाम्बवान राम को सलाह देता है कि

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

"शक्ति की करो मौलिक कल्पना

करो मौलिक पूजन"

राम शक्ति की अपने ढंग से साधना करते और अंत उन्हें शक्ति सद्धि हो जाती है।

होगी जय होगी जय है पुरूषोत्तम नवीन वह महाशक्ति राम वदन में हुई लीन

राम कथा का यह प्रसंग समसामयिक अर्थ संदर्भो को अपने ढंग से प्रस्तुत करता है। पराजित देश के लिए शक्ति की मौलिक कल्पना से अधिक महत्वपूर्ण कौन सा परामर्श हो सकता है। शक्ति अनुकरण से नहीं आ सकती उसकी तो मौलिक ढंग से ही अपनी परिस्थितियों के अनुकूल अर्जित करना पड़ता है। राजनीतिक आर्थिक पटल पर ष स्वदेशी आंदोलनष वस्तुतः शक्ति की मौलिक कल्पना का ही व्यावहारिक रूप है। .

कविता के अंत में ष्होगी जय होगी जयष कहते हुए शक्ति का राम के मुख में लीन हो जाना आत्मशक्ति के विकास को ही प्रस्तुत करता है जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद को उलटने की भारतीय जनशक्ति का सूचक है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

ष्तुलसीदासष् कविता में निराला भारत की सांस्कृतिक पराधीनता के अंधकार को प्रस्तुत करते हैं और प्रश्न उठाते हैं कि पश्चिमी संस्कृति से भारतीय संस्कृति की टकराहट है अथवा हम उनकी सांस्कृतिक दासता स्वीकार किए हैं।

मध्यकालीन परिदृश्य में समूची सांस्कृतिक निश्चेष्टता के बीच सांस्कृतिक अस्मिता का प्रश्न तुलसीदास के सामने उठता है। अपनी पत्नी रत्नावली की धिक्कार सुनते ही उन्हें रत्नावली में माँ शारदा का साक्षात्कार होता है। यहीं से उनके मन में सांस्कृतिक संघर्ष की कथावस्तु घूमने लगती है जो "रामचरितमानस" का आधार बनती है। तुलसी के पारिवारिक जीवन के बारे में प्रचलित लोककथा को इस कविता में कवि बृहत्तर उद्देश्य प्रदान करता है रू

जागा, जागा संस्कार प्रबल, रे गया काम तत्क्षण वह जल

देखा, शारदा नील–वसना हैं सम्मुख स्वयं सृष्टि रशना

जीवन–समीर–शुचि–निःश्वसना, वरदात्री

हिंदी साहित्य

जिस कलिका में कवि रहा बन्द

वह आज उसी में खुली मंद

भारती–रूप में सुरभि–छंद निष्प्रश्रय

ष्महाराजा शिवाजी का पत्र" (मिर्जा राजा जय सिंह के नाम) नामक लंबी कविता भी इसी तरह अतीत के माध्यम से वर्तमान के प्रश्न को उठाती है और मिर्जा राजा जय सिंह को औरंगजेब की ओर से लड़ने के लिए धिक्कारती है।

उठती जब नग्न तलवार है स्वतंत्रता की कितने ही भावों से याद दिला घोर दुख दारूण परतंत्रता का, फूंकती स्वतंत्रता निज मंत्र से जब व्याकुल कान कौन वह सुमेरू रेणु–रेणु जो न हो जाए ?

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

काव्यानुभूति में विद्रोह की भावभूमि

नवजागरण का सर्वाधिक तेजोद्दीप्त रूप में निराला की काव्यानुभूति की विद्रोही भावभूमि में दिखाई देता है। राजनीतिक सांस्कृतिक पराधीनता से मुक्ति के स्वर की चर्चा तो पीछे की जा चुकी है। उसके साथ–साथ जीवन के हर क्षेत्र में शोषण और परंपरागलित मान्यताओं से मुक्ति निराला की कविता का प्रमुख स्वर है। उनकी ष्बादलरागष् कविता कृषक की वेदना को सहानुभूति प्रदान करते हुए विप्लव के बादल का आह्वान करती है। विप्लव के बादल को देख अट्टालिकाओं में सुख सेज पर सोया धनाढ्य वर्ग भयभीत हो जाता है लेकिन जीर्ण–शीर्ण शरीर लिए कृषक उसको स्वागत करता है रू

विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते

अट्टालिका नहीं रे आतंक–भवन सदा पंक पर ही होता जल विप्लव प्लावन

धनी, वज्र गर्जन से बादल ! त्रस्त नयन मुख ढाँप रहे हैं। जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर, तुझे बुलाता कृषक अधीर, ऐ विप्लव के वीर !

इसी प्रकार श्वह तोड़ती पत्थरश शभिक्षुकश शविधवाश श्दीनश आदि जैसी कविताएँ गरीबी और शोषण की मार से पीड़ित जन की वेदना को वाणी देती हैं। कवि यहाँ एक ओर सामाजिक स्थितियों पर दूसरी ओर विधाता के विधान पर प्रश्न चिन्ह लगाता है और उस सोच का बहिष्कार करता है जो गरीबी और दैन्य को ईश्वरीय विधान मान कर स्वीकार कर लेने की सलाह देता है। उदाहरण के लिए कुछ पंक्तियाँ हैं :

पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक, चल रहा लकुटिया टेकभूख से सूख ओंठ जब जाते दाता–भाग्य विधाता से क्या पाते ?– घुट आँसुओं के पीकर रह जाते

–'भिक्षुक'

सह जाते हो उत्पीड़न की क्रीडा सदा निरंकुश नग्न, हृदय तुम्हारा दुर्बल होता भग्न

उत्पीड़न का राज्य, दुख ही दुख यहाँ है सदा उठाना, क्रूर यहाँ पर कहलाता है शूर

और हृदय का शूर सदा ही दुर्बल क्रूर;

––– –'दीन'

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

निराला की प्रसिद्ध विद्रोही– श्कविता कुकुरमत्ता में शोषितश जन की पीड़ा दैन्य नहीं रहती बल्कि पूँजीपति के विरोध में आवाज उठाती है। कुकुरमुत्ता को कवि ने शोषित जन का प्रतीक माना है और गुलाब को पूँजीपति का; गुलाब लगाने में बहुत परिश्रम व साधन लगाने पड़ते हैं जबकि कुकुरमुत्ता स्वयं ही लगता है। बगीचे में खड़े गुलाब से एक दिन कुकुरमुत्ता कह उठता है रू

"अबे, सुन बे, गुलाब, भूल मत जो पायी खुशबू, रंगों आब, खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट डाल कर इतरा रहा है कैपीटलिस्ट! कितनों को तूने बनाया गुलाम, माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा घाम, शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा तभी साधारणों से तू रहा न्यारा।

रोज पड़ता रहा पानी तू हरामी खानदानी

और अपने से उगा मैं बिना दाने का चुगा मैं

निराला की गद्य रचनाएँ

गद्य के क्षेत्र में निराला ने कहानी, उपन्यास, निबंध और संस्मरण लिखे हैं। उनका गद्य भी उनकी कविता की तरह क्रांतिकारी चेतना लिए है। उन्होंने स्त्रियों के दुखी जीवन पर अनेक कहानियाँ लिखीं। जातिप्रथा, ऊंच नीच का भेदभाव, विधवाओं के प्रति कटु व्यवहार, पुरूषों का अहंकार, भारतीय परिवार में घुटती हुई नारी का चित्रण इन कहानियों में है। श्देवीश और श्चतुरी चमारश कहानियाँ अवध के किसान आंदोलन से प्रभावित हैं। इनमें परिवेश और पात्र अपने यथार्थ रूप में लाकर रख दिए गए हैं। पात्रों में एक, अक्सर प्रमुख । पात्र–निराला स्वयं हैं इसलिए ये कहानी के साथ–साथ रेखाचित्र और संस्मरण भी बन पड़े हैं। कुल्लीभाट में कहानी, रेखाचित्र संस्मरण के साथ–साथ रिपोर्जि लेखन की कला भी मौजूद है। यहाँ अछूत समस्या के साथ–साथ हिंदू मुस्लिम विवाह की समस्या भी हैं। इसमें कुल्ली के साथ–साथ निराला का जीवन भी है। निराला साहित्य के क्षेत्र में लड़ते हैं कुल्ली सामाजिक क्षेत्र में। कल्लीभाट और श्बिल्लेसुर बकरिहाश में व्यंग्य तीखा होता जाता है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

कथा साहित्य के अलावा निराला ने बहुत से निबंध लिखे और पुस्तकों की आलोचनाएँ लिखीं। उनकी पुस्तकों की भूमिकाएँ ('परिमल' 'गीतिका की भूमिकाएँ) बड़े निबंधों के रूप में हैं। उन्होंने कई प्राचीन और आधुनिक रचनाकारों पर आलोचनात्मक निबंध लिखे हैं। विवेचन में भाव के साथ वे विचार तत्व पर काफी बल देते है कविता पढ़ते समय वे सबसे पहले भाषा की लय टटोलते हैं। हिंदी कवियों की भाषा का जो विवेचन उन्होंने किया है। उससे रचनाकार की अंतर्वृत्ति का पता चलता है।

निराला की गद्य शैली की विशेषता है वह पाठक से सीधे बात करते हुए उसे अपनी वक्तृत्व कला से प्रभावित करते हैं। उसमें उतने ही अलंकार हैं जितने बोल–चाल की भाषा में।

लेखनकार्य

निराला ने 1920 ई० के आसपास से लेखन कार्य आरंभ किया। उनकी पहली रचना श्जन्मभूमिश पर लिखा गया एक गीत था। लंबे समय तक निराला की प्रथम रचना के रूप में प्रसिद्ध श्जूही की कलीश शीर्षक कविता, जिसका रचनाकाल निराला ने स्वयं 1916 ई० बतलाया था, वस्तुतः 1921 ई० के आसपास लिखी गयी थी तथा 1922 ई० में पहली बार प्रकाशित हुई थी। कविता के अतिरिक्त कथासाहित्य तथा गद्य की अन्य विधाओं में भी निराला ने प्रभूत मात्रा में लिखा है।

भक्त ध्रुव (1926), भक्त प्रहलाद (1926), भीष्म (1926), महाराणा प्रताप (1927), सीखभरी कहानियाँ–ईसप की नीतिकथाएँ (1969)

अनुवाद

रामचरितमानस (विनय–भाग)–1948 (खड़ीबोली हिन्दी में पद्यानुवाद), आनंद मठ (बाङ्ला से गद्यानुवाद), विष वृक्ष, कृष्णकांत का वसीयतनामा, कपालकुंडला, दुर्गेश नन्दिनी, राज सिंह, राजरानी, देवी चौधरानी, युगलांगुलीय, चन्द्रशेखर, रजनी, श्रीरामकृष्णवचनामृत (तीन खण्डों में), परिव्राजक, भारत में विवेकानंद, राजयोग (अंशानुवाद)

रचनावली

निराला रचनावली नाम से 8 खण्डों में पूर्व प्रकाशित एवं अप्रकाशित सम्पूर्ण रचनाओं का सुनियोजित प्रकाशन (प्रथम संस्करण–1983)

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

उपसंहार

हिंदी दृ साहित्य में निराला जी का गौरवपूर्ण स्थान है द्य साहित्य जगत में मुक्त दृ छंद के प्रणेता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' है | 'महाप्राण निराला' नवीनता के कवि हैं द्य वे जीवन, साहित्य तथा समाज में सर्वत्र नवीनता के पक्षपाती तथा रूढ़ियों के कट्टर विरोधी हैं द्य वे छायावादी होने के साथ प्रगतिवादी और प्रगतिवादी होने के साथ ही दार्शनिक एवं अद्वितीय प्रतिभा के महान कवि हैं | उनके कृतित्व में छायावादी और प्रगतिवादी दोनों युगों की विचारधाराओं का सुंदर समन्वय है | उनके काव्य में छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नई कविता की समस्त विशेषताएं साकार हुई हैं द्य उन्होंने छंद, भाषा और भाव आदि को नवीनता प्रदान की है द्य निराला पर बंग दृ साहित्य और उसकी शैली तथा उनकी द्वारा प्रतिपादित दर्शन पर स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक सिद्धांतों का प्रभाव दृष्टिगत होता है द्य वह तत्वज्ञानी और रहस्यवादी भी हैं, साथ ही उनमें सामाजिक चेतना भी उत्कृष्ट रूप में विद्यमान है द्य उनकी इन्हीं विशेषताओं ने उन्हें हिंदी साहित्य दृ जगत में निराला स्थान प्रदान किया द्य

सन्दर्भ

1ण हिन्दी साहित्य कोश, भाग–२, सं० धीरेन्द्र वर्मा एवं अन्य, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण–२०११, पृष्ठ–६५१.
2ण इस तक ऊपर जायेंरूअ आ निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०, नयी दिल्ली, संस्करण–2002, पृ०–39–40.
3ण निराला रचनावली, खण्ड–1, सं०–नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०, नयी दिल्ली, संस्करण–1998, पृ०–19.
4ण निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०, नयी दिल्ली, संस्करण–2002, पृ०–60–61 तथा पृ०–440–441.
5ण निराला रचनावली, खण्ड–1, पूर्ववत, पृ०–42.
6ण इस तक ऊपर जायेंरूअ आ निराला रचनावली, खण्ड–1, पूर्ववत, पृ०–20.
7ण निराला रचनावली, खण्ड–5, पूर्ववत, पृ०–14.
8ण निराला रचनावली, खण्ड–7, पूर्ववत, पृ०–15.
9ण निराला रचनावली, खण्ड–1, पूर्ववत, पृष्ठ–16.

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:2 Issue: 3
June 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

प्रकाशित कृतियाँ

काव्यसंग्रह

अनामिका (1923), परिमल (1930), गीतिका (1936), अनामिका (द्वितीय), तुलसीदास (1939), कुकुरमुत्ता (1942), अणिमा (1943), बेला (1946), नये पत्ते (1946), अर्चना(1950), आराधना (1953), गीत कुंज (1954), सांध्य काकली, अपरा (संचयन)

उपन्यास

अप्सरा (1931), अलका (1933), प्रभावती (1936), निरुपमा (1936), कुल्ली भाट (1938–39), बिल्लेसुर बकरिहा (1942), चोटी की पकड़ (1946), काले कारनामे (1950) {अपूर्ण}, चमेली (अपूर्ण), इन्दुलेखा (अपूर्ण)

कहानी संग्रह

लिली (1934), सखी (1935), सुकुल की बीवी (1941), चतुरी चमार (1945) सखीश संग्रह का ही नये नाम से पुनर्प्रकाशन, देवी (1948) पूर्व प्रकाशित संग्रहों से संचयन, एकमात्र नयी कहानी श्जान की !श

निबन्ध–आलोचना

रवीन्द्र कविता कानन (1929), प्रबंध पद्म (1934), प्रबंध प्रतिमा (1940), चाबुक (1942), चयन (1957), संग्रह (1963),

पुराण कथा

महाभारत (1939), रामायण की अन्तर्कथाएँ (1956)

बालोपयोगी साहित्य

\

*****